1

एल्काना

एक भक्त पिता

(1:1–2:21)

''पिता'' की भूमिका में ज़िम्मेदारियों का बहुत बड़ा बोझ होता है। समाज शास्त्र के अध्ययन में परिवार में पिता की भूमिका का विशेष प्रभाव दिखाया जाता है। परिवार में बच्चे की भावनात्मक, सामाजिक तथा धार्मिक सोच आम तौर पर पिता पर ही निर्भर करती है। बच्चे की आंखें हमेशा पिता को भय तथा आत्मविश्वास से देखती हैं। बच्चा इस बात पर गर्व करता है कि ''मेरे पापा सब कुछ कर सकते हैं!'' ऐसा बचकाना दर्शन पिता के महत्व की सम्पूर्ण व्याख्या करता है। नीचे दी गई कविता इसके महत्व को और स्पष्ट करती है:

यदि मुझे पिता खरीदने जाना हो, तो मैं ऐसा आदमी खरीदूंगा:
जो एक छोटे लड़के के ''क्यों?'' का जवाब देने के लिए तैयार रहता हो
जो छोटे लड़के या लड़की से बड़े प्यार से बात करे,
जो थोड़ा अपनापन और आनन्द दे।
मैं तो ऐसा डैडी उठाऊंगा जो बाइबल के सुनहरे नियम को मानता हो,
और जो चर्च तथा बाइबल स्कूल में निरन्तर जाता हो।
अपने पारिवारिक वृक्ष पर लगाने के लिए मैं सबसे अच्छा डैडी खरीदूंगा–
और फिर मैं उसकी तरह जीने का प्रयत्न करूंगा, ताकि उसे मुझ पर गर्व हो!

परमेश्वर ने पुरुष को ''पिता'' के रूप में रखा और पिता की सारी जिम्मेदारियां देकर उससे ''भक्ति'' रखने की इच्छा भी की। किसी ने कहा है, ''सच्ची भक्ति मन का अनुशासित होना है जो ऐसा मजबूत और सुन्दर धुरा है जिसके द्वारा यह उत्पन्न होती है और जिस पर यह के संगीत साथ मिल जाती है। यह उस बड़े नियम की तरह है जो किसी को धीरे–धीरे परमेश्वर के सिंहासन के इर्द–गिर्द घुमाती रहती है।'' यह भक्त व्यक्ति परमेश्वर पर भरोसा रखने वाला होता है। अपने किसी भी कार्य में वह परमेश्वर को ही प्राथमिकता देता है! पिता होने के लिए यही गुण आवश्यक है!

एल्काना भक्ति का एक अच्छा उदाहरण है। उसके लिए ''भक्ति'' से कम शब्द उचित नहीं है। उसका विश्वास दृढ़ था जिससे उसके जीवन के सभी कार्य संचालित होते थे। वह ऐसा आदर्श पिता था जैसा हर बच्चा अपने पिता को देखना चाहता है।

ऐतिहासिक तौर पर, एल्काना के बारे में केवल इतनी ही जानकारी मिलती है कि वह कनान में बस जाने वालों की पांचवीं पीढ़ी में से था। वह लेवियों के घराने से था और रामाह में एप्रैम के एक इलाके में रहता था। पवित्र शास्त्र में उसके बारे में 1:1–2:21 से पता चलता है। उसकी दो पत्नियां थीं, जिसकी पुराने नियम में अनुमति थी (व्यवस्थाविवरण 21:15)। परमेश्वर के घर उदारतापूर्ण भेंट के साथ (1:24), यह तथ्य संकेत देता है कि वह एक धनी आदमी था। यद्यपि मूसा की व्यवस्था में एक से अधिक पत्नियां रखने की अनुमति तो थी, पर इसे सामान्यतया कभी व्यावहारिक तौर पर स्वीकारा नहीं गया था, न ही परमेश्वर की ओर से इसकी आज्ञा थी। इसलिए जिन परिवारों में ऐसा होता था, वे खत्म ही हो जाते थे!

एल्काना अच्छे चरित्र वाला मनुष्य था जो परमेश्वर में दृढ़ विश्वास रखता था। यह बात महत्वपूर्ण है ज़्योंकि वह न्यायियों के समय में हुआ है जब यहोवा के प्रति समर्पण बहुत असामान्य था। इस भज़्त पिता के बारे में कुछ बातें जानकर हम उस भज़्ति की झलक पा सकते हैं जो उसके जीवन में इतनी प्रभावी थी।

उसकी भज़्ति के लिए जिज़्मेदार तथ्य

पहला, एल्काना की जीवन शैली से उसके बच्चों के लिए धर्म का पता चलता था (1:3)। वह एक ऐसा आदमी था जो मूर्तियों के देवताओं के बजाय यहोवा की उपासना करता था (तु. 7:4)। एल्काना इस बात की भी समझ रखता था कि परमेश्वर केवल एक ही है और उसने यहोवा की सेवा करना चुना था। परमेश्वर में उसके विश्वास के कारण, उसके बच्चों को उसके मापदण्डों के अनुसार ''रहने'' की चुनौती मिलती थी (तु. अय्यूब 1:15)। वह ऐसा पिता था, जो अपने घर में आत्मिक बातों के विषय में बात करता था (1:23; व्यवस्थाविवरण 6:6–9)। ज़्या अपने परिवार पर प्रभाव रखने वाले ऐसे पिता की आप कल्पना कर सकते हैं? सचमुच वह परिवार कितना खुशहाल है जिसे एल्काना जैसे भज़्त पिता की आशीष मिली है! (उत्पज़ि 18:19)।

एक पिता मिसिसिप्पी नदी के तट पर रहता था। लोग उसे धनवान कहते थे। एक दिन उसके बड़े बेटे को उसके पास बेहोशी की हालत में लाया गया, ज़्योंकि उसका एज़्सीडेंट हो गया था। जल्दी से डॉज़्टर को बुलाया गया। पिता ने डॉज़्टर से पूछा कि ज़्या लड़का ठीक हो जाएगा। उसे उज़र मिला: ''नहीं, वह तो अंतिम सांसें ले रहा है और बच नहीं सकता।'' पिता ने कहा, ''ज़्या आप उसे मेरे पास ला सकते हैं ताकि हम उससे बात कर सकें? मैं नहीं चाहता कि वह इस बात को जाने बिना मर जाए कि वह मर रहा है।'' डॉज़्टर ने कोशिश की और थोड़ी देर के लिए लड़के को होश आ गया। पिता चिल्ला उठा, ''डॉज़्टर कहता है कि तू मर रहा है। मैं तुज़्हें यह बताए बिना मरने नहीं देना चाहता था।'' पुत्र ने कहा, ''पिता जी, ज़्या आप मेरे लिए प्रार्थना नहीं करेंगे?'' पिता खामोश था, पर अन्त में धीमे से उसके मुंह से निकला, ''मैं प्रार्थना नहीं कर सकता, बेटा।'' इसके बाद लड़का दोबारा बेहोश हो गया और थोड़ी देर बाद मर गया। इस त्रासदी का सबसे दुखद भाग यह है कि पिता अपने पुत्र के साथ बरसों से रह रहा था, परन्तु उसने उसके लिए प्रार्थना केवल एक ही बार की थी!

दूसरा, एल्काना अपने बच्चों को परमेश्वर के साथ किया वचन पूरा करने की आवश्यकता बताने में सचेत था (1:21)। न्यायियों का समय ''मन्नतों'' का युग था और यह उसका एक उदाहरण है। यह मन्नत सज़्भवतया हन्ना की बिनती से सज़्बन्धित थी। एल्काना के परिवार को अवश्य उस प्रतिज्ञा के बारे में पता था जो उसने परमेश्वर से की हुई थी। जब उन्होंने अपने पिता को पहले परमेश्वर के साथ प्रतिज्ञा करते और फिर उस प्रतिज्ञा को पूरा होते देखा, तो उन्हें और समझाने की आवश्यकता नहीं रही थी। अपने व्यवहार से, एल्काना ने उन्हें एक आवश्यक सबक सिखाया। पिताओ, ज़्या आपने अपने बच्चों को यह दिखाने की आवश्यकता समझी है कि परमेश्वर से की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करना चाहिए? आपके उदाहरण से दूसरों को अच्छा सबक मिलता है। निष्कपट निष्ठा का सज़्बन्ध ईमानदारी से किए गए उन समझौतों से है जो आप परमेश्वर से करते हैं (पढ़ें 1 यूहन्ना 2:6; भजन संहिता 1:1, 2; 116:17, 18; 2 राजा 15:1-3; और सभोपदेशक 5:2-6)।

तीसरा, एल्काना अपने परिवार को आराधना में जाने और योगदान देने के लिए उत्साहित करता था (1:4, 21)। यह पिता निरन्तर आराधना करता था! अपनी जिज़्मेदारी और विशेष आशीष को समझते हुए वह आराधना में जाने को तैयार रहता था। उसने वहां जाना नहीं छोड़ा (नहेमायाह 10:39; इब्रानियों 10:25)। उसे काफी दूर पैदल जाना पढ़ता था, लेकिन कठिनाई उसे रोक न पाई। ध्यान दें कि उसने यह भी सुनिश्चित किया कि उसका सारा परिवार उसके साथ जाए। ''पूरा घराना'' जाने की कोशिश करता था (1:21)। आराधना को एक पारिवारिक समय माना जाता था और उस आराधना से पारिवारिक एकता को बढ़ावा मिलता था। पूरे परिवार के साथ जाने के लिए योजना ज़रूरी थी; बलिदानों तथा उसके प्रबन्धों के लिए तैयारी आवश्यक थी। पिता के रूप में, वह इन सब चीज़ों में परमेश्वर की आराधना के लिए परिवार को तैयार करने में अगुआई देता! वह ऐसा पिता था जो अपने व्यवहार से वही कुछ करता था जो तैयारी के लिए आवश्यक था। उसकी आराधना में स्तुति, अंगीकार, बिनतियां और धन्यवाद होते थे। उसकी नज़र में आराधना का जीवन में विशेष महत्व था!

इस बात का संकेत है कि आराधना से वापस आने के बाद भी उसकी निष्ठा वैसे ही होती थी (1:19)। एल्काना प्रार्थनाओं से थकने वाला नहीं, बल्कि इसके लिए *हर* अवसर का लाभ उठाने वाला आदमी था। ज़्या आपको अपने परिवार के साथ उसके व्यवहार से एक शानदार सबक नहीं मिलता? पिता यदि आराधना से (अपने परिवारों के साथ) लौटने के बाद भी ऐसा ही व्यवहार करे तो इसका बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा (लूका 11:28)।

ऐसा संकेत है कि एल्काना अपने बच्चों को आराधना में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता था (1:4)। भेंट चढ़ा दी जाती थी और उसका एक भाग आराधना करने के लिए दे दिया जाता था। एक पर्व मनाया जाता और बलिदान का बाकी मिला भाग खा लिया जाता था। इन भोजों पर परमेश्वर की आज्ञा लेवियों, निर्धनों तथा विधवाओं को बुलाने की थी (व्यवस्थाविवरण 16:11)। इसमें भाग लेने वाले लोगों को अपने कार्यों को परमेश्वर की आराधना के रूप में देखना होता था। इस कारण, इन समयों पर एल्काना अपने बच्चों को

आराधना के स्वीकृत ढंग सिखा रहा था (इफिसियों 6:4)। आज यदि पिता अपने बच्चों को आराधना में ले जाने और शिक्षित करने में समय दे तो कितना अच्छा होगा। अज़्सर ऐसा होता है कि बच्चों को आराधना के ढंग के बारे में कोई शिक्षा नहीं मिल पाती जिस कारण उनकी आराधना केवल ऊपरी और व्यर्थ होती है!

भज़्ति के स्वभाव से मिलने वाले उसके फल

एल्काना की भज़्ति न केवल इस बात में कि उसने अपने परिवार से कैसा सज़्बन्ध रखा, बल्कि उसके चरित्र में भी जो उसने दिखाया, देखने योग्य है।

पहला, वह बात को समझता था (1:23)। उसने छूट दी हुई थी, ज़्योंकि वह दूसरे की भावना को समझने वाला व्यज़्ति था। जो पिता कड़े, कठोर, तथा अड़ियल होते हैं, वे अपने घरों में उस प्रेम की परिपूर्णता का आनन्द कभी नहीं ले पाते जो एल्काना ने लिया। यदि पिता की भज़्ति से लोगों को एल्काना वाली समझ मिल जाए तो कई घरों का भला हो सकता है। पारिवारिक एकता सज़्भव है *यदि* पिता नमर पड़ जाए, अपने आप को हठी होने से, कुछ फल न देने वाले अधिकार से दूर रखे और सब बातों में सबकी भावनाओं को समझे।

दूसरा, वह आत्मिक बातों में गहरी रुचि रखता था (1:21)। हर साल यह निश्चित होता था कि वह जाएगा, वह एक ऐसा पिता था जो अपने परिवार सहित परमेश्वर में गहरी आस्था रखता था। सब बातों में से जिनमें एल्काना की दिलचस्पी थी, आत्मिक बातों को प्राथमिकता देता था!

तीसरा, वह परमेश्वर पर निर्भर रहने वाला बन गया (1:23, 28)। बालक शमूएल की ओर देखते हुए उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके पुत्र को सज़्भाले, उसे बढ़ाए और आशीष दे (1:23)। वह जानता था कि यह सब परमेश्वर के हाथ में है, इसलिए उसने स्वेच्छा से अपने आप को परमेश्वर पर छोड़ दिया था (2:11)। हन्ना की इच्छा (1:28) यकीनन एल्काना की ही इच्छा थी। अपने बच्चे की जीवन भर रक्षा के लिए उन्होंने परमेश्वर पर निर्भर रहना था।

चौथा, उसे आशिषें मिलीं (2:20)। यहां पर बोने तथा काटने (गलतियों 6) का नियम लागू होता है। जैसे भजन 1 वाले धर्मी व्यज़्ति को अपने विश्वास के कारण ढेर सारी आशिषें मिलीं, उसी प्रकार एल्काना ने भी अपनी भज़्ति के कारण बहुत सी आशिषें पाईं। जो पिता इसी प्रकार भज़्ति के साथ बोते हैं, वे वैसी ही आशिषों का फल काटेंगे।

सारांश

मैं पुरुषों से पूछता हूं कि आप किस प्रकार के पिता हैं? ज़्या आप ऐसे पिता हैं जिसे आपके बच्चे खरीदना पसन्द करते हों? एल्काना में भज़्ति का ऐसा गुण था जिससे पिता होने की उसकी जिज़्मेदारी पूरी हुई। वह परमेश्वर के साथ सहयोग करने तथा अपने बच्चों को धर्म के मार्गों की शिक्षा देने की जिज़्मेदारी से अभिभूत था।

अपने आप को एक भज़्त पिता बनाने के लिए एल्काना का यह उदाहरण अपने जीवन

में लागू करें। अपने बच्चों के सामने हर रोज़ धार्मिक विश्वास दिखाएं। अपने बच्चों को परमेश्वर से की गई सारी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की आवश्यकता बताने में सावधान रहें। अपने परिवार को सच्चाई से परमेश्वर की आराधना में भाग लेने के लिए उत्साहित करें।

2:21 के बाद एल्काना नज़र से ओझल हो जाता है। लेकिन अपने अंतिम सालों में वह फिर दिखाई देता है। शायद शमूएल के रामाह में लौटने तक उसके माता-पिता जीवित ही थे। यदि थे, तो वह उनके निकट ही रहता होगा। शमूएल के बेटों को पता होगा कि उनका दादा एल्काना परमेश्वर का भय रखने वाला आदमी था! कितना सुन्दर विचार है! परमेश्वर करे कि हर पिता एल्काना की तरह बनने और पिता होने की अपनी जिम्मेदारी को भक्तिपूर्ण निभाने की कोशिश करे!